रजिस्टर्ड सं० डी—(डी एम)—73

REGISTERED NO. D—(DN)—73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 14] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 4, 1987 (चैत्र 14, 1909)
No. 14] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 4, 1987 (CHAITRA 14, 1909)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गयी निधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	333
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	389
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	—
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	463
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	2529
भाग III—खण्ड 2—पेटेण्ट कार्यालय द्वारा जारी की गयी पेटेण्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	227
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं, आदेश विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1377
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	49
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court ..	333
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	389
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	463
PART II—SECTION 1 Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	2529
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	227
PART III—SECTION 3—Notification issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1377
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	49
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

* Folio Nos. not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधिसंगत नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1987

सं० 31 प्रेजि/87- राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को उनकी उच्च-कोटि की विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "विशिष्ट सेवामेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जनरल रामेश्वरनाथ बला (आई० सी-10032) आर्टिलरी
2. ब्रिगेडियर सतिन्दर वर्मा (आई० सी-7755) कवचित कोर
3. ब्रिगेडियर दयाकृष्ण रस्तोगी (आई० सी०-11101) इंफैंट्री
4. ब्रिगेडियर इम्मान डा कोस्टा (आई० सी०-12833) इंफैंट्री
5. ब्रिगेडियर मन्थेना अल्लमा राजा अय्यनार राजा (आई० सी-8611) इंजीनियर्स
6. ब्रिगेडियर तेज अवतार टिक्कू (आई० सी-6411) सेना कोर (सेवानिवृत्त)
7. ब्रिगेडियर (कुमारी) कृष्णजीत कौर (एन० आर०-12377) सेना परिचर्या सेवा
8. ब्रिगेडियर रविन्दर कुमार धवन (आई०सी०-12148) विद्युत तथा यांत्रिकी इंजीनियर
9. ब्रिगेडियर कैलाशचन्द्र वसुन्धरा (आई०सी०-12257) इंजीनियर्स
10. कर्नल अमर सिंह (आई० सी०-16566), कवचित कोर
11. कर्नल सोम प्रकाश नन्दा (आई० सी०-12718), आर्टिलरी
12. कर्नल चन्द्रकांत मैत्रा (आई० सी-14172), आर्टिलरी
13. कर्नल नारायण चटर्जी (आई०सी०-15543), से०मे०, आर्टिलरी
14. कर्नल जयसिंह चिन्तामणि पेंढ्से (आई० सी०-10009), इंफैंट्री
15. कर्नल पीयूष कुमार मणिशंकर भट्ट (आई० सी-13808), से० मे०, इंफैंट्री
16. कर्नल सुखदीप सिंह मान (आई० सी०-15789), इंफैंट्री
17. कर्नल सरदार सिंह गजराज (आई० सी०-16723), से० मे०, इंफैंट्री
18. कर्नल बलबीर कुमार कटारिया (आई०सी०-13558), सिगनल्स
19. कर्नल हरमोहिन्दर सिंह ओबराय (एम० आर०-1396) सेना चिकित्सा कोर
20. कर्नल लाजपत कुमार आहूजा (आई० सी-12814), सेना आयुध कोर
21. कर्नल प्रेम कृष्ण कौल (आई०सी०-6176), आसूचना कोर (सेवा-निवृत्त)
22. लेफ्टिनेंट कर्नल शील कुमार पुरी (आई०सी०-12418) बीर चक्र 5, गोरखा राइफल, (फ्रंटीयर फोर्स)
23. लेफ्टिनेंट कर्नल उपेन्द्र कुमार वर्मा (आई०सी०-16720), सिख लाइट इंफैंट्री
24. लेफ्टिनेंट कर्नल पदम सिंह भंडारी (आई० सी०-16802), बिहार
25. लेफ्टिनेंट कर्नल जगमोहन लाल कपूर (आई० सी०-21448), राजपूताना राइफल्स
26. लेफ्टिनेंट कर्नल कुंचेरिया कणिप्पारबिल कुंचेरिया (आई० सी०-21741), 3, गोरखा राइफल्स
27. लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील कुमार वासुदेव राव देशपांडे (आई० सी०-22195) मराठा लाइट इंफैंट्री
28. लेफ्टिनेंट कर्नल जरनैल सिंह (आई० सी० 22219) इंफैंट्री
29. लेफ्टिनेंट कर्नल अमरेश कुमार त्यागी (आई० सी०-22317), 8 गोरखा राइफल्स
30. लेफ्टिनेंट कर्नल उदय भानु घोष (आई०सी०-16974), इंजीनियर्स
31. लेफ्टिनेंट कर्नल पद्मनाभन कुमारेश (आई० सी०-18168), इंजीनियर्स
32. लेफ्टिनेंट कर्नल दिलीप कुमार घोष (आई० सी०-21048), सेना सेवा कोर
33. लेफ्टिनेंट कर्नल गणेश चन्द्र हजारिका (एम० आर०-2261), सेना चिकित्सा कोर
34. लेफ्टिनेंट कर्नल योगेन्द्र सिंह (एम० आर-02475), सेना चिकित्सा कोर
35. लेफ्टिनेंट कर्नल नरेन्द्र कुमार भंडारी (एम० आर०-2668), सेना चिकित्सा कोर
36. लेफ्टिनेंट कर्नल चन्द्र शेखर पंत (एम० आर० 2705), सेना चिकित्सा कोर
37. लेफ्टिनेंट कर्नल प्राणनाथ अवस्थी (डी०आर०-10131), सेना दन्त चिकित्सा कोर
38. लेफ्टिनेंट कर्नल भारत राज चेतल (डी० आर०-10260), सेना दन्त चिकित्सा कोर
39. लेफ्टिनेंट कर्नल हरि मोहन पंत (आई० सी०-21123) आसूचना कोर
40. लेफ्टिनेंट कर्नल जीवन प्रकाश विजयवर्गीय (आई० सी० 15137 के०), इंजीनियर्स
41. मेजर गणेश मुदानन्दा देवया (आई० सी 30673), आर्टिलरी
42. मेजर जोधबीर सिंह संधू (आई० सी 23430), सिख लाइट इंफैंट्री
43. मेजर विष्णु प्रसाद शर्मा (आई० सी-24381), बिहार
44. मेजर कटनेश्वरकर गोविन्द विश्वनाथ राव (आई०सी०-26274), कुमाऊं रेजीमेंट
45. मेजर वी० एस० सोमना गौडार (आई०सी०-30766) मराठा लाइट इंफैंट्री
46. मेजर धरम पाल (आई० सी-31668), कुमाऊं
47. मेजर सतीश चन्दर कोछड़ (आई० सी०-33645), सिख लाइट इंफैंट्री

48. मेजर मदन मोहन भट्ट (आई० सी०-58062), 7/5 गोरखा राइफल्स

49. मेजर शंकर कृष्णमूर्ति (आई० सी०-23785), सिगनल्स

50. मेजर बद्रेमुनीर सैयद मोहम्मद मुल्ला (आई० सी० 25171), सेना आयुद्ध कोर

51. मेजर चन्द्र मोहन ओझा (एम० आर० 3562), सेना चिकित्सा कोर

52. मेजर कौशल किशोर सक्सेना (आई० सी०-28556), आसूचना कोर

53. एम० ई० एस० 300052 कार्यपालक इंजीनियर सुदेश कुमार गुप्ता, सेना इंजीनियरी सेवा

54. कैप्टन गुरमिंदर सिंह रंधावा (आई० सी०-31399), आर्टिलरी

55. कैप्टन परमवीर भल्ला (आई० सी०-34432) आर्टिलरी

56. कैप्टन राकेश कुमार शर्मा (आई० सी०-34513), आर्टिलरी

57. कैप्टन अश्विनि कुमार कनवा (एम० आर०-10958), सेना चिकित्सा कोर

58. जे० सी० 16314 सूबेदार मेजर (आनरेरी कैप्टन), राजिन्दर सिंह, ब्रिगेड आफ द गार्ड्स

59. जे० सी० 70258 रिसालदार मेजर यशेसर सिंह, कवचित कोर

60. जे० सी० (एन० वाई० ए०) 6909347 नायब सूबेदार भगीरथ सर्राई, सेना आयुद्ध कोर

61. 8020521 हवलदार भवान सिंह, कुमाऊं

62. 1364111 नायक बटियंडा पूवैया शिमैया, इंजीनियर्स

63. 13861919 लांस नायक शाबुली सदेकर, सेना सेवा कोर

64. कमोडोर मनोहर कृष्ण कुमार अरोड़ा (40151 ए)

65. कैप्टन गुप्तेश्वर राय, एन० एम० (00528 जैड)

66. कैप्टन बरोन घोष (60136-वाई०)

67. कैप्टन परसीवल एडविन मेकाडेन (C0656-आर०)

68. कमांडर पुथुपरम्पु आविमुरियिल मैथ्युकुट्टी अब्राहम (40277-एन०)

69. कमांडर रामप्रकाश पृथी (70096-एच०)

70. कमांडर अनिल लाल (50238-ए०)

71. कमांडर मोहिन्दर जानकीरमण (50253-के०)

72. सर्जन लेफ्टिनेंट कमांडर सलिल कुमार मोहंती (75171 टी)

73. लेफ्टिनेंट कमांडर नारायनन रामेश्वर रवि (50428-एच०)

74. जसवंत सिंह, मास्टर चीफ पेटी अफसर, प्रथम श्रेणी (045851-एच०)

75. तेजबहादुर सिंह, मास्टर चीफ पेटी अफसर, राईटर प्रथम श्रेणी (003373-एफ०)

76. नन्नापनेनी अप्पाराव, मास्टर चीफ इलेक्ट्रिशियन (रेडियो) प्रथम श्रेणी (067093 के०)

77. दामोदर प्रसाद, मास्टर चीफ पेटी अफसर, स्टूअर्ड प्रथम श्रेणी (065312-एन०)

78. ग्रुप कैप्टन शिवरामकृष्णन श्रीनिवासन (3935) वैमानिकी इंजीनियर यांत्रिक

79. ग्रुप कैप्टन रमेश नाथ सिंह, (6210), लेखा

80. ग्रुप कैप्टन शंकर नारायण रामास्वामी (6403) वैमानिकी इंजीनियरी (इलेक्ट्रानिकी)

81. ग्रुप कैप्टन धरम सिंह सिन्हाग (556) वैमानिक इंजीनियरी यांत्रिक

82. ग्रुप कैप्टन रमेश नन्दरा (6709) संभारिकी

83. विंग कमांडर सतीश कुमार राम लाल धाम (8097) चिकित्सा

84. विंग कमांडर हरिनाथ शर्मा (9204) प्रशासन (मरणोपरान्त)

85. विंग कमांडर रमण कुमार भंडारी (9947) वैमानिकी इंजीनियरी (इलेक्ट्रानिकी)

86. विंग कमांडर जकरिया भाई (9948) वैमानिकी इंजीनियरी (इलेक्ट्रानिकी)

87. विंग कमांडर रामप्रकाश शर्मा (10063) वैमानिकी इंजीनियरी (इलेक्ट्रानिकी)

88. विंग कमांडर सरबजीत सिंह (10429) उड़ान (पायलट)

89. विंग कमांडर सत्येन्द्रपाल सिंह (10699) वैमानिकी इंजीनियरी (इलेक्ट्रानिकी)

90. विंग कमांडर हरप्रकाश सिंह सिंधु (11051) उड़ान (पायलट)

91. विंग कमांडर ललित कुमार कोछड़ (11194) चिकित्सा

92. विंग कमांडर यदविन्दर सिंह वालिया (11258) प्रशासन

93. विंग कमांडर अनूप सिंह बेदी (6440) संभारिकी (सेवा निवृत्त)

94. स्क्वाड्रन लीडर ठाकुर सिंह दत्ता (11933) प्रशासन

95. स्क्वाड्रन लीडर निर्दोष वात्स्यायन त्यागी (12765) (उड़ान पायलट)

96. स्क्वाड्रन लीडर अशोक कुमार सिंह (13529) वैमानिकी इंजीनियरी यांत्रिक

97. फ्लाइट लेफ्टिनेंट इलिकल विजयन (14864) मौसम विज्ञान

98. 210550-टी मास्टर वारंट अफसर अजीत सिंह, रडार फिटर

99. 218247-एच मास्टर वारंट अफसर ओमप्रकाश लांबा, इलेक्ट्रिकल फिटर

100. 232509 मास्टर वारंट अफसर मधुकर भाउराव देवरे, फ्लाइट इंजीनियर

101. 248512 जूनियर वारंट अफसर वैलायुधन पिल्ले गोपीनाथन नायर, इंजन फिटर

102. 291286 सार्जेंट जोसफ मैथ्यू थोपेराबील, इंजन फिटर

103. 642412 सार्जेंट काशीनाथ मंडल, एयर फ्रेम फिटर

सं० 32-प्रेज/87—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को उसकी उच्च-कोटि की विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "विशिष्ट सेवा मेडल का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1 कर्नल येंदुर नागेश राव (आई० सी० 12593) वि० से० मे०, सेना आयुध कोर

सं० 33-प्रेज/87—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. श्री गुलाम नबी मार्गी, (मरणोपरान्त)
जम्मू तथा कश्मीर बैंक लि०, लांगेट,
जिला बारामूला (जम्मू तथा कश्मीर)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 7 जून 1976)

7 जून, 1976 को दोपहर के समय जम्मू तथा कश्मीर बैंक की लांगेट शाखा में तीन सशस्त्र लुटेरे घुस आए और उन्होंने बैंक लूट लिया। बैंक से निकलते समय वे बैंक का दरवाजा बाहर से बन्द कर गए। बैंक के मैनेजर श्री गुलाम नबी मार्गी ने शोर मचाया और बैंक से बाहर निकल कर लुटेरों का पीछा किया। वे हथियारों से लैस लुटेरों के सरगना से भिड़ गए और उस पर काबू पा लिया। उन्होंने अपने जीवन

की परवाह किए बिना अदम्य साहस का परिचय दिया। लुटेरों में से एक ने श्री मार्गी के सीने में गोली मार दी और उनका वहीं निधन हो गया। तब तक गांव के लोग वहां आ गए और श्री मार्गी के बलिदान से प्रेरित होकर उन्होंने अंधाधुन्ध गोलीबारी करने वाले उन लुटेरों का तब तक पीछा किया जब तक उनकी बन्दूकों की गोलियां खत्म होने पर उन्होंने आत्म-समर्पण नहीं किया।

ये लुटेरे और कोई नहीं थे, बल्कि मोहमद मकबूल बट के दल के सदस्य थे, जो कुख्यात पाकिस्तानी एजेन्ट था और केन्द्रीय कारागार श्रीनगर से भाग निकला था। मकबूल बट को फांसी दी जानी थी और उसे पकड़ने के लिए दस हजार रुपए का इनाम रखा गया था। श्री मार्गी ने अपनी जान पर खेलकर जो वीरता दिखाई उसके परिणामस्वरूप ही बहुत ही खतरनाक और राष्ट्र-विरोधी घुसपैठियों को पकड़ा जा सका और इस प्रकार देश की सुरक्षा के लिए बना खतरा टाला जा सका।

श्री गुलाम नबी मार्गी ने अपने जीवन की सुरक्षा की परवाह किए बिना उत्कृष्ट साहस और असाधारण कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. भूतपूर्व सूबेदार राम दास,
गाजियाबाद (उ० प्र०)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 जून, 1983)

गाजियाबाद में राशन की दुकान चलाकर आजीविका कमाने वाले भूतपूर्व सूबेदार श्री राम दास 20 जून, 1983 को सुबह लगभग 9.30 बजे जब मिट्टी के तेल के एक थोक विक्रेता के पास गए तो मोटर साइकिल पर सवार तीन व्यक्ति अचानक वहां आए और उन्होंने थोक विक्रेता का ब्रीफ-केस छीन लिया, जिसमें 80,000/– रुपए थे। यह देखकर श्री राम दास ने अपनी छड़ी लुटेरे की कलाई पर मारी जिससे उसके हाथ से ब्रीफ-केस नीचे गिर गया। लुटेरे ने अपने देशी पिस्तौल से तत्काल गोली चला दी परन्तु श्री राम दास ने फुर्ती से अपने हाथ से पिस्तौल का रुख दूसरी तरफ कर दिया। इस पर उसके दोनों साथी मोटर साइकिल पर भागने की कोशिश करने लगे, परन्तु श्री राम दास ने अपनी छड़ी की सहायता से मोटर साइकिल को आगे बढ़ने से रोक दिया और वह उलट गई। इस बीच वहां कुछ लोग पहुंच चुके थे और उन्होंने उन दोनों को पकड़ लिया। तीसरा लुटेरा, जिसके पास पिस्तौल थी, बच कर भाग निकला।

इस प्रकार भूतपूर्व सूबेदार राम दास ने जो 79 वर्ष के हैं और अपंग हैं, अपने जीवन को जोखिम में डालकर उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

3. श्री वाई० श्रीहरि शर्मा, (मरणोपरान्त)
डोन, जिला–कुरनूल (आन्ध्र प्रदेश)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 14 दिसम्बर, 1983)

14 दिसम्बर, 1983 की रात लगभग 9.00 बजे श्री श्रीहरि शर्मा, जो आन्ध्र बैंक की डोन शाखा के मैनेजर थे, के घर कुछ अज्ञात लोग घुस आए और उन पर तथा घर के लोगों पर हमला किया। उन्होंने बैंक की तिजोरी की चाबियां मांगी। श्री शर्मा का घर भी बैंक के अहाते में था। यह घटना उस समय हुई जब श्री शर्मा एक लेखाकार और एक क्लर्क के साथ बैंक का अर्धवार्षिक खाता बन्द करने के लिए ब्याज का हिसाब लगा रहे थे। उस समय घर में श्री शर्मा के पिता, पत्नी और पुत्र भी मौजूद थे। लुटेरों ने श्री शर्मा की तथा दूसरों की भी पिटाई की। वे श्री शर्मा से चाबियां लेने के लिए उन्हें यंत्रणा देते रहे। उन्होंने तिजोरी को तोड़ने की भी कोशिश की। लेकिन नाकामयाबी से हताश होकर श्री शर्मा को छुरा मारकर उनकी हत्या कर दी और उनका लगभग दस हजार रुपए का सामान लूट कर ले गए। बाद में लुटेरे पकड़े गए और उन्हें इस जघन्य अपराध का दोषी पाया गया।

इस प्रकार श्री वाई० श्रीहरि शर्मा ने अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए उत्कृष्ट साहस का परिचय देकर लुटेरों को बैंक की तिजोरी की चाबियां देने की बजाए अपनी सम्पत्ति और अन्ततः अपने जीवन का बलिदान दिया।

4. ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग,
भोपाल, मध्य प्रदेश (सेवानिवृत्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 दिसम्बर, 1984)

2/3 दिसम्बर, 1984 की आधी रात में मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में जहरीली गैस के फैलने की भयानक दुर्घटना हुई थी जिसमें हजारों परिवारों के कई लोग मारे गए और बहुत गंभीर रूप से घायल हुए। दुर्घटना स्थल से केवल 400 गज की दूरी पर स्थित स्टार पेस्टीसाइड्स फैक्टरी के महा प्रबंधक ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग फैक्टरी के उन 1100 कर्मचारियों में से थे जो उस रात जहरीली गैस की चपेट में आ गए थे। ब्रिगेडियर गर्ग अपनी तथा अपने परिवार के जीवन की रक्षा की परवाह किए बिना सारी रात भर तब तक बचाव कार्य में लगे रहे जब तक कि सभी घायल व्यक्तियों को सैनिक और सिविल अस्पतालों में भर्ती नहीं कर लिया गया।

ब्रिगेडियर गर्ग ने इस तरह जहरीली गैस से घायल कई लोगों की जाने बचाईं। ये खुद एक घंटा पैंतालिस मिनट तक इस जहरीली गैस में सांस लेते रहे जिससे इनकी हालत बहुत नाजुक हो गई थी लेकिन फिर भी बचाव कार्य के लिए बराबर टेलीफोन करते या सुनते रहे। लोगों को अस्पतालों में पहुंचाने के लिए समुचित व्यवस्था करने के बाद ये कर्मचारियों के आवासीय कालोनी में गए और अधिक से अधिक लोगों को अपनी कार में बिठाया और स्वयं कार चलाकर उन्हें सैनिक अस्पताल पहुंचाया। इन्होंने आक्सीजन लेने के बारे में डाक्टरों की राय केवल तब मानी जब उन्हें विश्वास हो गया कि अब बचाव कार्य पूरा हो गया है।

इस प्रकार ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग ने असाधारण साहस, अपने कर्मचारियों तथा उनके परिवारों की सुरक्षा के प्रति पूरी जागरुकता, कारगर नेतृत्व, दृढ़ता और जहरीली गैस के फैलने की उस भयानक दुर्घटना के समय गहरी सूझ-बूझ का परिचय दिया।

5. मेजर अशोक कुमार सिंह (आई० सी०-27941) एस० एम०, इंजीनियर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 28 सितम्बर, 1985)

सैंतीस फुट लम्बी फाईबर ग्लास की बनी "तृष्णा" नामक नौका में विश्व भ्रमण करने वाले भारतीय सेना अभियान दल में मेजर अशोक कुमार सिंह को स्थायी सदस्य के रूप में चुना गया था। भारत के नौका चालन के इतिहास में इसे एक महान साहसिक अभियान के रूप में लिखा जाएगा।

यह अभियान दल 28 सितम्बर, 1985 को बम्बई से रवाना हुआ था और अब उसे यूनाइटेड किंगडम से वापिस बम्बई लौटना था। लौटते समय "तृष्णा" पहले तो बिस्के खाड़ी में आए भयानक तूफान में घिर गई थी फिर भूमध्य सागर में पहुंचकर उसकी तूफानी लहरों की चपेट में आई और वहां से निकलकर फिर लाल सागर में पहुंची जहां उसे काफी कठिनाइयां आई। एक समय तो ऐसा आया कि नौका के मुख्य पाल ही भयानक आंधी-तूफान में उड़ गए। चालकों ने जान जोखिम में डालकर नए पाल लगाए और नौका को सुरक्षित बम्बई ले आए।

मारिशस से सेंट हेलेना द्वीप की यात्रा के समय आशा अन्तरीप के पास इनकी नौका भयंकर समुद्री तूफान की चपेट में आ गई। लगभग 65 नाट की गति से चल रही तूफानी हवाओं ने 40 से 45 फुट की ऊंचाई तक पानी उछालकर नौका को झकझोर दिया और उस छोटी नौका से होकर टनों पानी निकलने लगा। जीवन रक्षा के उपकरण और वायरलैस सैट आदि बह गए। ऐसी भयावह स्थिति के बावजूद अभियान दल ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए नौका को वहां से सुरक्षित आगे ले जाने में सफलता प्राप्त की।

इस यात्रा का सबसे खतरनाक दौर था आकलैंड से तस्मान सागर होते हुए सिडनी की यात्रा। इस यात्रा के दौरान कर्मीदल को ऐसे भयानक तूफान का सामना करना पड़ा जो पिछले सौ सालों में भी शायद ही कभी आया हो। इन खतरों को झेलते हुए कर्मीदल जब सिडनी पहुंचा तो सभी बुरी तरह थक चुके थे और उनकी भूख भी मारी गई थी। सिडनी से ब्रिसबेन की यात्रा और फिर कैर्नस तथा थर्सडे द्वीप की यात्रा भी कम जोखिम पूर्ण नहीं थी। उन्हें इस यात्रा के दौरान खतरनाक ग्रेट बेरियर रीफ से होकर जाना पड़ा।

यद्यपि मेजर अशोक कुमार सिंह का बायां पांव कृत्रिम होने के कारण उन्हें काफी असुविधा थी, फिर भी इन्होंने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुसार अपने साथियों के साथ यात्रा के सभी जोखिमों को झेलकर विजय पाकर उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

6. स्क्वाड्रन लीडर प्रदीप शर्मा (13777), उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 24 अक्तूबर, 1985)

24 अक्तूबर, 1985 की रात को स्क्वाड्रन लीडर प्रदीप कुमार शर्मा जब अपने एक शिष्य के साथ किरण विमान में प्रशिक्षण उड़ान पर थे तो अचानक विमान के इंजन में खराबी आ गई जिसमें न केवल इंजन में बिजली बंद हुई बल्कि उसके मार्ग दर्शक उपकरणों में भी भ्रामक संकेत मिलने लगे और इससे यह स्पष्ट था कि इंजन में कुछ विशेष प्रकार की खराबी आ गई थी। इन्होंने बड़ी सूझबूझ और व्यावसायिक कुशलता का परिचय देते हुए यह मालूम किया कि इंजन में ऐसी खराबी आ गई है जिसका कोई उपचार नहीं है। ऐसी स्थिति में कोई भी पायलट हवाई अड्डे से लगभग 35 कि० मी० दूर यदि विमान छोड़कर नीचे कूद गया होता तो उसे उचित ही समझा जाता क्योंकि इससे पहले रात में ऐसी स्थिति के विमान को जबरन नीचे उतारने का कभी किसी ने प्रयास नहीं किया था। यदि ये विमान छोड़कर नीचे कूद जाने का एक मात्र उपलब्ध विकल्प अपना लेते तो उससे न केवल नीचे कूदते समय इन्हें चोटें आतीं बल्कि बहुमूल्य विमान भी नष्ट हो जाता और इस तरह विमान में आई खराबी के कारणों का उपलब्ध प्रमाण भी नष्ट हो जाता।

अपने उत्कृष्ट कौशल और व्यावसायिक कुशलता पर भरोसा रखते हुए अपनी जान की जरा भी परवाह किए बिना रात के समय विमान को सफलतापूर्वक जबरन नीचे उतार दिया और विमान को किसी भी तरह की कोई क्षति नहीं होने दी।

इस प्रकार, स्क्वाड्रन लीडर प्रदीप शर्मा ने अपनी जान की परवाह किए बिना बहुमूल्य विमान को नष्ट होने से बचाने के लिए असाधारण व्यावसायिक कुशलता, सूझबूझ और अदम्य साहस का परिचय दिया।

7. मेजर महावीर सिंह बलहारा (आई० सी०-24568) से० मे०, बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 अप्रैल, 1986)

12 अप्रैल 1986 में एक भारत-अमरीकी अभियान दल को संरक्षण प्रदान करने और उसे अपना काम पूरा करने में सहायता देने के लिए सियाचिन ग्लेशियर में "सिया कांगड़ी" तक एक संक्रियात्मक अभियान दल भेजा गया। मेजर महावीर सिंह बलहारा, जो लद्दाख में अग्रिमतर क्षेत्र में एक राइफल कम्पनी के कमाण्डर थे, इस मिशन का नेतृत्व करने के लिए आगे आए। इन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से मिशन के लिए योग्य कार्मिकों को चुना और इन्हें गहन प्रशिक्षण देकर सभी सावधानियां बरतते हुए अपने मिशन की योजना बनाई।

इस बात को भली भांति जानकर कि राष्ट्र के लिए उनका मिशन कितना महत्वपूर्ण है, ये अपने सैनिकों को, जो वस्तुतः पर्वतारोही नहीं थे, गहरी खाइयों, भीषण ग्लेशियरों से होकर आगे ले गए और पर्वतारोहण का बहुत कम सामान होने के बावजूद बहुत खराब मौसम और बर्फीले अंधड़ में भी बेस कैम्प स्थापित करने में सफल हुए। दुश्मन को हमारे इस मिशन की जानकारी थी। इसलिए वह

पश्चिम दिशा से हमारे इस मिशन को चोटी की ओर बढ़ने से रोकने की कोशिश करने लगा। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, ये फुर्ती से मिया-कांगड़ी की चोटी की ओर बढ़े और वहां से गोली-बारी कर अपनी स्थिति मजबूत बनाकर दुश्मन की खोजना नाकाम करने में सफल हुए। इसके बाद इन्होंने वह रास्ता निकाला जहां से होकर भारत-अमरीकी अभियान दल, जून 1986 में चोटी पर चढ़ने में कामयाब हुआ।

उसके बाद मेजर बलहारा ने पर्वतारोहण के इतिहास में उस समय एक नया अध्याय जोड़ा जब ये और इनके सैनिक जो वस्तुतः पर्वतारोही नहीं थे, पर्वतारोहण के साजो-सामान के बिना 24,350 फुट ऊंची चोटी पर चढ़ने में सफल हुए। चोटी से उतरते समय ये बड़ी कुशलता से दुश्मन की गोली-बारी के बीच से अपने दल को सुरक्षित नीचे ले आए।

इस प्रकार, मेजर महावीर सिंह बलहारा ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

8. सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट प्रदीप्त नारायण महापात्र, (आई० सी०–42851), सिख लाइट इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 10 मई, 1986)

पूरे सियाचिन ग्लेशियर क्षेत्र में विला फोण्डला शत्रु की नजर में एक ऐसा स्थान है जिसे प्राप्त करना उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। इसलिये उसने उस पर कब्जा करने या उसे अपने नियंत्रण में लेने के लिये कई बार कोशिश की। वह मार्च 1986 के खराब मौसम का फायदा उठाकर आगे बढ़ा और 19000 फुट की ऊंचाई पर एक ऐसी जगह पर कब्जा कर लिया जहां से वह अपनी चौकियों पर निगरानी रख सकता था। इस प्रकार निगरानी रखने की ऐसी स्थिति की वजह से वह अपने सुरक्षित बंकरों से मशीनगन और तोपों का इस्तेमाल करते हुए फायर कर सकता था और फिर विला-फोण्डला दर्रे की सुरक्षा करना कठिन कार्य था।

10 मई, 1986 की रात सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट प्रदीप्त नारायण महापात्र को इस चौकी से शत्रु को हटाने का कठिन काम सौंपा गया। इस बात को पूरी तरह से जानते हुए भी कि आगे बढ़ने में कितने खतरे हैं, ये पर्वतारोहण कला की तनिक भी जानकारी न होने और कठिन तथा दुर्गम मार्ग के बावजूद इस काम को करने के लिये आगे आये। इनके आगे बढ़ने का मतलब था, शत्रु की नाक के नीचे से गुजरते हुए उसकी तोपों की गोली-बारी को झेलते हुए आगे बढ़ना। इस बहादुर अफसर ने बहुत धैर्य के साथ रेंग-रेंग कर केवल एक रस्सी के सहारे बरफ की दीवारों को पार किया। अगर शत्रु की नजर इन पर पड़ गई होती तो इनकी टुकड़ी का कोई भी सैनिक जीवित न बचता। परन्तु इनके महान नेतृत्व में इनकी टुकड़ी शत्रु की चौकी के पीछे से चढ़ती हुई एकदम चोटी पर पहुंच गई। शत्रु को हक्का-बक्का करते हुए इनकी टुकड़ी के 11 बहादुर सैनिकों ने ऊपर से हथगोले फेंके और गोलियां बरसाईं। इनका प्रहार इतना भीषण था कि शत्रु के दांत खट्टे हो गये और वह जान बचाकर भाग निकला। वह अपने पीछे दो मझोली मशीनगनें, एक सब-मशीनगन, एक स्वचालित राइफल, एक राकेट लांचर और गोला बारूद से भरे बक्से छोड़ गया।

शत्रु को एक महत्वपूर्ण चौकी से हटाने के इस साहसपूर्ण कार्य में सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट प्रदीप्त नारायण महापात्र ने जान की बाजी लगाकर उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

9. श्री अजय कुमार क्लेयर, (मरणोपरांत) जिला जालंधर (पंजाब)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 19 जून, 1986)

19 जून, 1986 को श्री अजय कुमार क्लेयर अपना एक चेक भुनाने कैनरा बैंक की अपरा शाखा में गए। वहां उन्होंने देखा कि रिवाल्वर लिए तीन व्यक्ति बैंक लूट रहे हैं। उनमें से एक व्यक्ति बैंक के मुख्य द्वार पर खड़ा था। श्री अजय कुमार क्लेयर उस पर पीछे से झपटे और उसे कस कर पकड़ लिया। मैनेजर की केबिन में खड़ा दूसरा डाकू यह देखकर श्री क्लेयर के पास आया और उनकी बांह में गोली मार दी जिससे वे नीचे गिर गए। इसके बाद डाकू ने उनके ऊपर पांव रखा और नजदीक से उनके सीने पर गोली मार दी और उनका तत्काल निधन हो गया।

इस प्रकार श्री अजय कुमार क्लेयर ने अपनी जान देकर बैंक की सम्पत्ति को बचाने के लिए अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

सु० नीलकण्ठन, राष्ट्रपति का उप सचिव

जल-भूतल परिवहन मंत्रालय

(नौवहन पक्ष)

नई दिल्ली, दिनांक 13 मार्च 1987

संकल्प

सं० एम० टी० 13011/1/86/एम० टी०—जबकि भारत सरकार के परिवहन मंत्रालय जल-भूतल परिवहन विभाग ने अपने दिनांक 1-8-1986 के संकल्प के माध्यम से मर्चेंट नेवी प्रशिक्षण मण्डल को समाप्त कर दिया है ।

अब, भारत सरकार के जल-भूतल परिवहन मंत्रालय ने यह निश्चय किया है कि तीन सलाहकार समितियां, टी० एम० "राजेन्द्र", मेरीन इंजीनियरिंग प्रशिक्षण निदेशालय और लाल बहादुर शास्त्री नौटिकल और इंजीनियरिंग कालेज प्रत्येक के लिए एक-एक का गठन निम्न प्रकार से किया जाए :—

(1) टी० एम० "राजेन्द्र" समिति

(2) डी० एम० ई० टी० समिति

(3) एल० बी० एस० एन० एण्ड ई० कालेज समिति

उद्देश्य और लक्ष्य :

उपरोक्त समितियों के उद्देश्य और लक्ष्य इस प्रकार होंगे :—

(i) मर्चेंट नेवी अधिकारियों के प्रशिक्षण से संबंधित सभी पहलुओं पर विचार करना,

(ii) संस्थानों में होने वाले प्रशिक्षण पर नजर रखना, और

(iii) एक उपयुक्त, कुशल और निष्ठावान मर्चेंट नेवी कार्मिक बनाने के लिए समय-समय पर आवश्यकतानुसार इन उपायों की सिफारिश करना ।

समिति का स्वरूप और कार्य :—

(1) टी० एम० राजेन्द्र समिति :

स्वरूप :

अध्यक्ष	:	नौवहन महानिदेशक
उपाध्यक्ष	:	नौटिकल सलाहकार/मुख्य सर्वेक्षक, जो भी सेवा में वरिष्ठ है ।
सदस्य	:	(1) नौटिकल सलाहकार, भारत सरकार
		(2) मुख्य सर्वेक्षक, भारत सरकार
		(3) प्रधानाचार्य, लाल बहादुर शास्त्री नौटिकल एण्ड इंजीनियरिंग कालेज, बम्बई
		(4) निदेशक, डी० एम० ई० टी०, कलकत्ता
		(5) मर्चेंट नेवी प्रशिक्षण संस्थानों के साथ सम्पर्क रखने वाले उप नौवहन महानिदेशक
		(6) नौसेना मुख्यालयों के प्रतिनिधि
		(7) भारतीय नौवहन निगम, बम्बई के प्रतिनिधि
		(8) आई० एन० एम० ए० के प्रतिनिधि
		(9) एम० यू० आई० के प्रतिनिधि
		(10) शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधि
सदस्य सचिव	:	(11) टी० एम० राजेन्द्र के अधीक्षक कप्तान

(2) डी० एम० ई० टी० समिति :—

स्वरूप :—

अध्यक्ष	:	नौवहन महानिदेशक
उपाध्यक्ष	:	नौटिकल सलाहकार/मुख्य सर्वेक्षक, जो भी सेवा में वरिष्ठ हो ।
सदस्य	:	(1) नौटिकल सलाहकार, भारत सरकार
		(2) मुख्य सर्वेक्षक, भारत सरकार
		(3) प्रधानाचार्य, लाल बहादुर शास्त्री नौटिकल एवं इंजीनियरिंग कालेज, बम्बई
		(4) टी० एम० राजेन्द्र, बम्बई के अधीक्षक कप्तान ।
		(5) मर्चेंट नेवी प्रशिक्षण संस्थानों के साथ सपर्क रखने वाले उप नौवहन महानिदेशक
		(6) नौसेना मुख्यालयों के प्रतिनिधि
		(7) भारतीय नौवहन निगम के प्रतिनिधि
		(8) आई० एन० एम० ए० के प्रतिनिधि
		(9) एम० यू० आई० के प्रतिनिधि
		(10) शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधि ।
सदस्य-सचिव		(11) निदेशक, डी० एम० ई० टी० कलकत्ता

(3) लाल बहादुर शास्त्री नौटिकल एवं इंजीनियरिंग कालेज समिति

स्वरूप :—

अध्यक्ष	:	नौवहन महानिदेशक
उपाध्यक्ष	:	नौटिकल सलाहकार/मुख्य सर्वेक्षक, जो भी सेवा में वरिष्ठ हो ।
सदस्य	:	(1) नौटिकल सलाहकार, भारत सरकार
		(2) मुख्य सर्वेक्षक, भारत सरकार
		(3) टी० एस० राजेन्द्र, बम्बई के अधीक्षक कप्तान ।
		(4) निदेशक, डी० एम० ई० टी० कलकत्ता
		(5) मर्चेंट नेवी प्रशिक्षण संस्थानों से संपर्क रखने वाले उप नौवहन महानिदेशक
		(6) नौसेना मुख्यालयों के प्रतिनिधि
		(7) भारतीय नौवहन निगम के प्रतिनिधि
		(8) आई० एन० एम० ए० के प्रतिनिधि
		(9) एम० यू० आई० के प्रतिनिधि
		(10) शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधि
सदस्य-सचिव	:	(11) प्रधानाचार्य, लाल बहादुरशास्त्री नौटिकल एवं इंजीनियरिंग कालेज, बम्बई

कार्य :—

समिति के कार्य इस प्रकार होंगे :—

(i) उद्योग में नौसंचालन अधिकारी की जनशक्ति आवश्यकता के आधार पर समय-समय पर संस्थान में वार्षिक इनटेक की समीक्षा करना ।

(ii) कैडेटों के चुनाव और भर्ती की प्रक्रिया की समीक्षा ।

(iii) प्रशिक्षण कार्यक्रम को तकनीकी विकास के बराबर लाने के उद्देश्य से लगातार अध्ययन और कोर्स के पाठ्यक्रम की समीक्षा करना ।

(iv) संस्थान का आवधिक निरीक्षण करना ।

(v) प्रशिक्षण उपकरण को आधुनिक बनाने के लिए उपायों की सिफारिश करना ।

(vi) नए पाठ्यक्रमों को शामिल करने की सिफारिश करना ।

(vii) कैडेटों के प्रशिक्षण, सुख-सुविधाओं की व्यवस्था और बोर्डिंग, लॉजिंग, मनोरंजन, चिकित्सा, खेल आदि की सुविधाओं से संबंधित सभी मामलों अथवा अन्य सभी मामलों, जो समिति के संदर्भ में सरकार निर्धारित करती है, की जांच करना ।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रतिलिपि आदेश राष्ट्रपति के निजी और सैनिक सचिवों, प्रधानमंत्री सचिवालय, मंत्रिमण्डल सचिवालय भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, सभी राज्य सरकारों, पत्तन न्यासों और नौवहन महानिदेशक, बम्बई को भेजी जाए ।

आदेश दिया जाता है कि सामान्य सूचना हेतु यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

पी० वी० राव, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1987

No. 31-Press/87.—The President is pleased to approve the award of the 'Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

1. Major General Rameshwar Nath Batra (IC-10032), Artillery.
2. Brigadier Satinder Varma (IC-7755), Armoured Corps.
3. Brigadier Daya Krishna Rastogi (IC-11101), Infantry.
4. Brigadier Ian Da Costa (IC-12833), Infantry.
5. Brigadier Manthena Annama Raja Ayyanar Raja (IC-8611), Engineers.
6. Brigadier Tej Avatar Tikku (IC-6441), Army Service Corps (Retd).
7. Brigadier (Miss) Krishanjit Kaur (NR-12377), Military Nursing Service.
8. Brigadier Ravinder Kumar Dhawan (IC-12148), Electrical and Mechanical Engineers.
9. Brigadier Kailash Chandra Vashudhra (IC-12257), Engineers.
10. Colonel Amar Singh (IC-16566), Armoured Corps.
11. Colonel Som Parkash Nanda (IC-12718), Artillery.
12. Colonel Chander Kant Maitra (IC-14172), Artillery.
13. Colonel Narayan Chatterjee (IC-15543), SM, Artillery.
14. Colonel Jaya Sinha Chintamani Pendse (IC-10009), Infantry.
15. Colonel Piyushkumar Manishankar Bhatt (IC-13808), SM, Infantry.
16. Colonel Sukhdip Singh Mann (IC-15789), Infantry.
17. Colonel Sardar Singh Gajraj (IC-16723), SM, Infantry.
18. Colonel Balbir Kumar Kataria (IC-13558), Signals.
19. Colonel Harmohinder Singh Uberoi (MR-1396), Army Medical Corps.
20. Colonel Lajpat Kumar Ahuja (IC-12814), Army Ordnance Corps.
21. Colonel Prem Krishan Kaul (IC-6176), Intelligence Corps (Retd).
22. Lieutenant Colonel Sheel Kumar Puri (IC-12418), Vrc. 5 Gorkha Rifles (Frontier Force).
23. Lieutenant Colonel Opendra Kumar Verma (IC-16720), Sikh LI.
24. Lieutenant Colonel Padam Singh Bhandari (IC-16802), Bihar.
25. Lientenant Colonel Jag Mohan Lal Kapoor (IC-21448), Rajputana Rifles.
26. Lieutenant Colonel Kuncheria Kalipparambil Kuncheria (IC-21741), 3 Gorkha Rifles.
27. Lieutenant Colonel Sunil Kumar Wasudeorao Deshpande (IC-22195), Maratha Light Infantry.
28. Lieutenant Colonel Jarnail Singh (IC-22219), Infantry.
29. Lieutenant Colonel Amresh Kumar Tyagi (IC-22317) 8 Gorkha Rifles.
30. Licutenant Colonel Uday Bhanu Ghosh (IC-16794), Engineers.
31. Lieutenant Colonel Padmanabhan Kumaresh (IC-18168), Engineers.
32. Lieutenant Colonel Dilip Kumar Ghosh (IC-21048), Army Service Corps.
33. Lieutenant Colonel Ganesh Chandra Hazarika (MR-2261), Army Medical Corps.
34. Lieutenant Colonel Yogendra Singh (MR-02475), Army Medical Corps.
35. Lieutenant Colonel Narendra Kumar Bhandari (MR-2668), Army Medical Corps.
36. Lieutenant Colonel Chandra Shekhar Pant (MR-2705), Army Medical Corps.
37. Licutenant Colonel Pran Nath Awasthi (DR-10131), Army Dental Corps.
38. Lieutenant Colonel Bharat Raj Chetal (DR-10260), Army Dental Corps.
39. Lieutenant Colonel Hari Mohan Pant (IC-21123), Intelligence Corps.
40. Lieutenant Colonel Jeewan Prakash Vijayavargiya (IC-15137K), Engineers.
41. Major Ganesh Mundanda Devaya (IC-30673), Artillery.
42. Major Jodhbir Singh Sandhu (IC-23430), Sikh Light Infantry.
43. Major Bishnu Prasad Sharma (IC-24381), Bihar.
44. Major Katneshwarkar Govind Vishwanath Rao (IC-26274), Kumaon Regiment.
45. Major V. S. Somana Goudar (IC-30766), Maratha Light Infantry.
46. Major Dharam Pal (IC-31668), Kumaon.
47. Major Satish Chander Kochhar (IC-33645), Sikh Light Infantry.
48. Major Madan Mohan Bhatt (IC-38062), 7/8 Gorkha Rifles.
49. Major Shankar Krishnamurthy (IC-23785), Signals.
50. Major Badremuneer Sayed Mohammed Mulla (IC-25174), Army Ordnance Corps.
51. Major Chandra Mohan Adya (MR-3562), Army Medical Corps.
52. Major Kaushal Kishore Saxena (IC-28536), Intelligence Corps.
53. MES 300052 Executive Engineer Sudesh Kumar Gupta, Military Engineering Service.
54. Captain Gurminder Singh Randhawa (IC-31399), Artillery.
55. Captain Param Vir Bhalla (IC-34432), Artillery.
56. Captain Rakesh Kumar Sharma (IC-34513), Artillery.
57. Captain Ashwani Kumar Kanva (MR-10958), Army Medical Corps.
58. JC-16314 Subedar Major (Hony Capt) Rajinder Singh, Brigadier of the Guards.
59. JC-70258 Risaldar Major Basheshar Singh, Armoured Corps.
60. JC(NYA) 6909347 Naib Subedar Bhagirath Samai, Army Ordnance Codps.
61. 8020521 Havildar Bhawan Singh, Kumaon.
62. 1364111 Naik Battiyanda Poovaiah Thimmaiah, Engineers.
63. 13861949 Lance Naik Shabuli Sadekar, Army Service Corps.
64. Commodore Manohar Krishnakumar Banger (40151 A).
65. Captain Gupteshwar Rai, NM (00528 Z).
66. Captain Barin Ghose (60136 Y).
67. Captain Percival Edwin Macaden (00656 R).
68. Commander Puthuparampu Adimuriyil Mathew Kutty Abraham (40277 N).
69. Commander Ram Prakash Pruthi (70096 H).
70. Commander Anil Lal (50238 A).
71. Commander Mohinder Janakiraman (50253 K).

72. Surgeon Lieutenant Commander Salil Kumar Mohanty (75171 T).

73. Lieutenant Commander Narayanan Rameshwar Ravi (50428 H).

74. Jaswant Singh, Master Chief Petty Officer First Class (045851 H).

75. Tej Bahadur Singh, Master Chief Petty Officer Writer First Class (063373 F).

76. Nannapaneni Apparao, Master Chief Electrician (Radio) First Class (067093 K).

77. Damodar Prasad, Master Chief Petty Officer Steward First Class (065312 N).

78. Group Captain Sivaramakrishnan Srinivasan (5935), Aeronautical Engineering (Mechanical).

79. Group Captain Ramesh Nath Singh (6210), Accounts.

80. Group Captain Sankaranarayana Ramaswamy (6403), Aeronautical Engineering (Electronics).

81. Group Captain Dharam Singh Minhas (6556), Aeronautical Engineering (Mechanical).

82. Group Captain Ramesh Chander (6709), Logistics.

83. Wing Commander Satish Kumar Ram Lal Dham (8097), Medical.

84. Wing Commander Hari Nath Sharma (9204), Administrative (Posthumous).

85. Wing Commander Raman Kumar Bhandari (9947), Aeronautical Engineering (Electronics).

86. Wing Commander Zakerya Bhai (9948), Aeronautical Engineering (Electronics).

87. Wing Commander Ram Prakash Sharma (10063), Aeronautical Engineering (Electronics).

88. Wing Commander Sarabjit Singh (10429), Flying (Pilot).

89. Wing Commander Satyrendra Pal Singh (10699), Aeronautical Engineering (Electronics).

90. Wing Commander Har Prakash Singh Sidhu (11051), Flying (Pilot).

91. Wing Commander Lalit Kumar Kochhar (11194), Medical.

92. Wing Commander Yadvinder Singh Walia (11258), Administrative.

93. Wing Commander Anup Singh Bedi (6440), Logistics (Retired).

94. Squadron Leader Thakur Singh Datta (11933), Administrative.

95. Squadron Leader Nirdosh Vatsyayan Tyagi (12765), Flying (Pilot).

96. Squadron Leader Ashok Kumar Singh (13529), Aeronautical Engineering (Mechanical).

97. Flight Lieutenant Pllykkal Vijayan (14864), Meterological.

98. 210550-T Master Warrant Officer Ajit Singh, Radar Fitter.

99. 218247-H Master Warrant Officer Omprakash Lamba, Electrical Fitter.

100. 232569 Master Warrant Officer Madhukar Bhaurao Deore, Flight Engineer.

101. 248342 Junior Warrant Officer Velayudhan Pillai Gopinathan Nair, Engine Fitter.

102. 291286 Sergeant Joseph Mathew Thomeraviel, Engine Fitter.

103. 642412 Sergeant Kashi Nath Mandal, Air Frame Fitter.

No. 32-Press/87.—The President is pleased to approve the award of the 'Bar to Vishisht Seva Medal' to the undermentioned person for distinguished service of a high order :—

Colonel Baindur Nagesh Rao (IC-12593), VSM, Army Ordance Corps.

No. 33-Press/87.—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. SHRI GHULAM NABI MARGEY, THE J&K BANK LTD., LANGET, DISTRICT BARAMULA (J&K). *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 7th June, 1976)

On the 7th June, 1976, at about mid-day, three armed gangsters forced their entry into the Langet Branch of the J&K Bank and looted the bank. While leaving, they bolted the door from outside. Shri Ghulam Nabi Margey, Manager of the Bank, raised an alarm and coming out of the building chased the dacoits. He grappled with the leader of the gang who was heavily armed and over-powered him. He showed tremendous courage without caring for his own life. One of the gangsters shot Shri Margey in the chest and he died on the spot. The villagers who had collected by that time, inspired by the sacrifice made by Shri Margey, continued their chase in spite of indiscriminate firing by the gangsters. The chase continued till the gangsters exhausted their ammunition and surrendered.

The gangsters were none other than the members of gang led by Mohammad Maqbool Batt, the notorious Pakistani agent who had escaped from the Central Jail, Srinagar. He was waiting for the execution of death sentence and carried a reward of Rs. 10,000/- for his arrest. The gallant lead given by Shri Margey at the cost of his own life led to the capture of extremely dangerous and anti-national infiltrators and thereby averted further threat to the security of the country.

Shri Ghulam Nabi Margey thus exihibited conspicuous courage and extra-ordinary devotion to duty in utter disregard of his personal safety.

2. EX-SUBEDAR RAM DAS, GHAZIABAD (UTTAR PRADESH)

(Effective date of the award : 20th June, 1983)

On the 20th June, 1983, at about 9.30 a.m., Ex-Subedar Ram Das, who owns a Ration shop for his livelihood, went to a wholesale dealer in kerosene oil in Ghaziabad. Suddenly, three persons appeared on a motor cycle and snatched the brief case containing an amount of Rs. 80,000/- from the kerosene dealer. Ex-Subedar Ram Das hit the snatcher on his wrist with a stick. The brief case fell on the ground. The dacoit immediately fired at Shri Ram Das with his country made pistol. Shri Ram Das managed to change the direction of the pistol with his hand. The other two dacoits tried to run away on the motor cycle, but were prevented by Shri Ram Das with his stick. The motor cycle fell down and the dacoit were nabbed by the crowd. The third dacoit, with the pistol, however, managed to escape.

The above act of Ex-Subedar Ram Das, who is 79 years old and is handicapped, is one of conspicuous courage performed in the face of great risk to his own life.

3. SHRI Y. SHREEHARI SARMA, DONE, DISTRICT KURNOOL, (ANDHRA PRADESH) *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 14th December, 1983)

On the night of 14th December, 1983, at about 9.00 p.m., some unknown intruders gained entry into the residence of Shri Shreehari Sarma, Manager, Done branch of Andhra Bank and attacked him and other inmates. They demanded the keys of the iron safe of the Bank. The residence of Shri Sarma was in the same premises as the Bank. The incident occurred when Shri Sarma along with an Accountant and a Clerk of the Bank were busy calculating interest for the half-yearly closing. Shri Sarma's father, wife and son were also present in the house. The assailants beat Shri Sarma and others. They continued torturing Shri Sarma in order to extract the keys from him. They also tried in vain to break open the safe and in disgust stabbed Shri Sarma to death and carried away his personal belongings worth about Rs. 10,000/-. The assailants were, however, apprehended and later convicted for this heinous offence.

Shri Y. Shreehari Sarma thus exhibited conspicuous courage beyond the call of his duty and preferred to surrender his own property and ultimately his life than to hand over the keys of the vaults of the Bank to the assailants.

4. BRIGADIER MANOHAR LAL GARG, AVSM, BHOPAL, MADHYA PRADESH (RETIRED)

(Effective date of the award : 2nd December, 1984)

On the midnight of 2nd/3rd December, 1984 the well known lethal MIC gas tragedy occurred in Bhopal in Madhya Pradesh. In this tragedy thousands of families suffered fatal casualties and very severe injuries. Brigadier Manohar Lal Garg, General Manager of the Straw Products factory which is only 400 yards away from the site of the incident, was amongst the 1100 employees of the factory who were in the grip of the toxic gas fumes in that fateful night. Brigadier Garg stuck on showing complete disregard to his personal safety and to the safety of his family till all arrangements for evacuation of casualties to the Military and Civil Hospitals were made.

Brigadier Garg was thus able to save many lives under critical condition. After inhaling concentrated MIC gas for about one hour and forty-five minutes in a critical condition, he continued to attend to telephone calls in connection with the rescue operations. After giving detailed instructions for evacuation he went to the Staff residential colony, collected as many persons as possible in his car and drove himself to the Military Hospital. He agreed to the suggestion of the Doctors to put himself on oxygen, only when he was satisfied that evacuation was complete.

Brigadier Manohar Lal Garg has thus displayed exceptional courage, a deep concern for the welfare of his employees and their families, effective leadership, determination and presence of mind in the face of a chemical catastrophe.

5. MAJOR ASHOK KUMAR SINGH (IC-27941), SM, ENGINEERS.

(Effective date of the award : 28th September, 1985)

Major Ashok Kumar Singh was selected as a permanent crew member of the Indian Army expedition around the world in a thirty seven footer fibre glass yacht "Trishna" which will go down in the annals of sailing history in India as a daring feat of great enterprise.

Trishna had to sail from the United Kingdom to Bombay, the port from where the expedition was flagged off on the 28th September, 1985. Enroute the United Kingdom to Bombay, Trishna ran into fierce storms in the Bay of Biscay, rough weather in the Mediterranean and then again in the Red Sea. At one stage the main sails were blown off in the gales. At great peril, the crew managed to put up fresh sails and safety steer Trishna to Bombay.

Their journey from Mauritius to St. Helena Island around the Cape of Good Hope, was a story of heroic fight against countless storms when wind intensity increased to sixty five knots whipping up waves to forty-fifty feet height. Tons of water broke over the small boat, washing away the life saving gear and packing of the wireless. They steered Trishna with steel nerves, keeping it on course.

The worst part of the journey was from Auckland to Sydney across the Tasman Sea where the crew faced one of the worst storms in 100 years. Braving through the dangers the crew reached Sydney with complete exhaustion and loss of appetite. The sail from Sydney to Brisbane further to Cairns and Thursday Island was equally difficult, when they had to steel past the Great Barrier Reef which was a great navigational hazard.

Major Ashok Kumar Singh, in spite of being handicapped having an artificial left leg, shared the tremendous difficulties with his teammates and displayed conspicuous gallantry in the best traditions of the Indian Army.

6. SQUADRON LEADER PRADEEP SHARMA (13777), FLYING (PILOT)

(Effective date of the award : 24th October, 1985)

On the 24th October, 1985, when Squadron Leader Pradeep Sharma was flying a night instructional sortie on Kiran aircraft alongwith his pupil, the engine of the aircraft suddenly failed due to material failure. Besides the total loss of power from the engine, Squadron Leader Sharma was also confronted with confusing engine instrument indications because of the very peculiar nature of the failure. Displaying exemplary coolness and professionalism, he correctly analysed the failure for which there was no remedial action. At this stage, any pilot would have been fully justified in abandoning the aircraft, which was over 35 kilometre away from base, as a forced landing at night had never been attempted before. Had he choosen the apparently only possible option of abandoning the aircraft, besides the inevitable loss of the aircraft and probable ejection related injuries to pilots, valuable evidence as to why the engine failed, would have been lost.

Relying on his consummate skill and professionalism, Squadron Leader Pradeep Sharma completely disregarded the perils to himself and carried out a successful forced landing at night in a copy book fashion without any damage to the aircraft.

Squadron Leader Pradeep Sharma thus rendered superlative professionalism, cool and profound courage in saving a valuable aircraft in utter disregard to his own safety.

7. MAJOR MAHAVIR SINGH BALHARA (IC-24568), SM, BIHAR.

(Effective date of the award : 12th April, 1986)

An operational expedition to 'Sia Kangri' in the Siachen Glacier was sent on the 12th April, 1986 to give protection to and enable an Indo-US expedition to accomplish its mission. Major Mahavir Singh Balhara, Commander of a Rifle Company in the forward most sector in Ladakh, volunteered to lead the mission. He selected the personnel judiciously, trained them vigorously and planned his mission maticulously.

Realising the significance of his mission to the Nation, he led his men, who were not real mountaineers. Constantly exhorting them, through deep crevasse infested glacier and established the base camp despite limited mountaineering equipment, adverse weather condition and blinding blizzards. Being aware of our mission, the enemy was observed trying to approach from the West to intercept our approach to the peak. Sensing the gravity of the situation, Major Mahavir Singh Balhara quickly moved up on heights of Sia Kangri and thwarted their designs by gaining domination over the enemy by his observation and fire. Thereafter, he opened the route which enabled the Indo-US Expedition to scale the peak successfully in June, 1986.

Subsequently, Major Balhara achieved a unique feat in the history of mountaineering when he alongwith his men who were not real mountaineers scaled the 24350 feet high peak without proper kit. While descending, he moved his team tactically and brought it safely amidst enemy's artillery fire.

Major Mahavir Singh Balhara thus displayed conspicuous gallantry, courage and dynamic leadership of a high order.

8. SECOND LIEUTENANT PRADIPTA NARAYAN MOHAPATRA (IC-4285), SIKH LIGHT INFANTRY.

(Effective date of the award : 10th May, 1986)

In the entire Siachen Glacier area Bila Fond La has gained a prestigious status in the enemy's preceptions and accordingly the enemy has repeatedly attempted to gain possession of this pass or dominate it. In this effort, the enemy taking advantage of the poor visibility due to bad weather had managed to occupy a feature at an altitude of 19000 feet during the month of March, 1986. This place overlooks own posts and due to its dominance by observation, enemy could bring down accurate machine gun and artillery fire from fortified bunkers rendering defences of Bila Fond La difficult.

On the night of the 10th May 1986, Second Lieutenant Pradipta Narayan Mohapatra was entrusted with the most difficult task of evicting the enemy from this post. Knowing fully well what dangers lay ahead, he volunteered to carry out this herculean task in the face of heavy odds with practically no knowledge of mountaineering. Though the task involved moving under the nose of the enemy and under a hail of their bullets, yet with cool courage, this gallant officer crawled over an ice wall using only one rope to support him. Had the enemy observed the move not one in the patrol would

have been saved. But under his dynamic leadership, the assault group soon found itself on the summit behind the enemy post. Taking them by surprise, he attacked with his team of eleven brave men lobbing grenades and firing on the move. The ferocity of the attack was such that the enemy fled in panic, leaving behind two Medium Machine Guns, a Submachine Gun, an automatic rifle, a rocket launcher and stacks of ammunition.

In this daring feat of evicting the enemy from an impregnable position at great peril to his life, Second Lieutenant Pradipta Narayan Mohapatra displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

9. SHRI AJAY KUMAR KLAIR, *(Posthumous)*
DISTRICT JALANDHAR (PUNJAB)

(Effective date of the award : 19th June 1986)

On the 19th June, 1986, Shri Ajay Kumar Klair who had gone to Apra branch of Canara Bank to encash a cheque, saw three persons armed with revolvers looting the Bank. He swooped, from behind, on one of the dacoits who was standing at the main gate of the bank. Shri Klair held the dacoit tight with a strong grip. Another dacoit, standing in the Manager's cabin, went upto Shri Klair and shot him in his arm. Shri Klair fell down. The dacoit then stepped on Shri Klair and shot him in his chest at point blank range and Shri Klair died on the spot.

Shri Ajay Kumar Klair thus displayed exemplary courage at the cost of his own life in protecting bank's property.

S. NILAKANTAN
Deputy Secretary to the President

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT
(SHIPPING WING)

New Delhi, the 13th March 1987

RESOLUTION

No. ST. 13011/1/86-MT.—Whereas the Government of India in the Ministry of Transport, Department of Surface Transport has abolished the Merchant Navy Training Board vide its Resolution dated 1-8-1986.

Now, the Government of India, in the Ministry of Surface Transport has decided to constitute three Advisory Committees, one each for T. S. 'Rajendra', Directorate of Marine Engineering Training and Lal Bahadur Shastri Nautical and Engineering College, as under :—

(1) T. S. 'Rajendra' Committee.

(2) D. M. E. T. Committee.

(3) L. B. S. N&E College Committee.

AIMS & OBJECTS

Aims and objects of the above committees will be as under :—

(i) To consider all aspects pertaining to the training of Merchant Navy Officers.

(ii) Supervise the training imparted in the institutions; and

(iii) Recommend from time to time such measures as may be necessary for the building of an adequate, efficient and devoted Merchant Navy Personnel.

COMPOSITION & FUNCTIONS OF THE COMMITTEES

(1) *T. S. RAJENDRA COMMITTEE* :

Composition :

Chairman

Director General of Shipping.

Vice-Chairman

Nautical Adviser/Chief Surveyor, whosoever is senior in service.

Members

(1) Nautical Adviser, Govt. of India.

(2) Chief Surveyor, Govt. of India.

(3) Principal, LBS N&E College, Bombay.

(4) Director, DMET, Calcutta.

(5) Dy. D. G. Shipping dealing with the Merchant Navy Training Institutions.

(6) Rep. of Naval Headquarters.

(7) Rep. of S.C.I., Bombay.

(8) Rep. of INSA.

(9) Rep. of M.U.I.

(10) Rep. of M/o Education.

Member-Secy.

(11) Capt. Supdt. T. S. 'Rajendra'.

(2) *D.M.E.T. COMMITTEE*

Composition :

Chairman

Director General of Shipping.

Vice-Chairman

Nautical Adviser/Chief Surveyor, whosoever is senior in service.

Members

(1) Nautical Adviser, Govt. of India.

(2) Chief Surveyor, Govt. of India.

(3) Principal, LBS N&E College, Bombay.

(4) Capt. Supdt. T. S. 'Rajendra', Bombay.

(5) Dy. D. G. Shipping dealing with Merchant Navy Training Institutions.

(6) Rep. of Naval Headquarters.

(7) Rep. of SCI.

(8) Rep. of INSA.

(9) Rep. of M. U. I.

(10) Rep. of M/o Education.

Member-Secy.

(11) Director, D.M.E.T., Calcuta.

---

(3) *L.B.S. N&E COLLEGE COMMITTEE*

Composition :

Chairman

Director General of Shipping.

Vice-Chairman

Nautical Adviser/Chief Surveyor, whosoever is senior in service.

Members

(1) Nautical Adviser, Govt. of India.

(2) Chief Surveyor, Govt. of India.

(3) Capt. Supdt. T. S. 'Rajendra', Bombay.

(4) Director, D. M. E. T., Calcutta.

(5) Dy. D. G. Shipping dealing with Merchant Navy Training Institutions.

(6) Rep. of Naval Headquarters.

(7) Rep. of S. C. I.

(8) Rep. of INSA.

(9) Rep. of M. U. I.

(10) Rep. of M/o Education.